eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 07, July 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21757042

दिल्ली की प्राचीनता व महत्त्व

डॉ श्वेता शर्मा[1], सीमा रानी[2]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर– इतिहास, मान्यवर कांशीराम राजकीय महाविद्यालय, गाजियाबाद उ0प्र0
[2]शोधार्थी, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ, उ0प्र0

Received: 20 July 2026 Accepted & Reviewed: 28 July 2026, Published: 31 July 2026

Abstract

दिल्ली भारत के सर्वाधिक प्राचीन एवं ऐतिहासिक नगरों में से एक है, जिसका इतिहास हजारों वर्षों की सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक परम्पराओं से जुड़ा हुआ है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वर्णित इन्द्रप्रस्थ से लेकर आधुनिक राष्ट्रीय राजधानी तक दिल्ली ने अनेक सभ्यताओं, राजवंशों और साम्राज्यों के उत्थान एवं पतन का साक्ष्य प्रस्तुत किया है। मौर्य, गुप्त, तोमर, चौहान, दिल्ली सल्तनत, मुगल तथा ब्रिटिश शासनकाल में दिल्ली ने सत्ता के प्रमुख केन्द्र के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। इसकी भौगोलिक स्थिति, यमुना नदी का तट तथा उत्तर भारत के व्यापारिक एवं सामरिक मार्गों पर स्थित होने के कारण इसका महत्त्व निरन्तर बढ़ता गया। दिल्ली केवल राजनीतिक राजधानी ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, कला, स्थापत्य, साहित्य, शिक्षा एवं धार्मिक सहिष्णुता का भी महत्वपूर्ण केन्द्र रही है। यहाँ स्थित कुतुब मीनार, लाल किला, पुराना किला, हुमायूँ का मकबरा, जामा मस्जिद तथा अनेक पुरातात्त्विक अवशेष इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साक्षी हैं। आधुनिक काल में दिल्ली भारत के प्रशासन, न्याय, कूटनीति, शिक्षा, उद्योग, व्यापार तथा वैश्विक संपर्क का प्रमुख केन्द्र बन चुकी है।

प्रस्तुत शोध पत्र दिल्ली की प्राचीनता व इसके महत्त्व पर केंद्रित है। इसके माध्यम से दिल्ली के राजनीतिक संस्कृति व सामाजिक स्थिति का वर्णन किया गया है। प्राचीन समय में दिल्ली की स्थापना तोमरवंश के राजपूत राजा, आनंगपाल (अनंगपाल तोमर दितीय) ने लगभग 11वी शताब्दी (1052 वी) में की थी। अनंगपाल तोमर के बाद कई शासकों ने दिल्ली पर शासन किया तथा अपने –2 कार्यकाल में महलों, मकबरा, किलो, मस्ज़िदों मंदिरों का निर्माण कराया तथा अपने धर्म से संबंधित इमारतें दिल्ली में स्थापित की, दिल्ली पर चौहान वंश, गुलाम वंश, खिलजी वंश,तुगलक वशं, सैयद वशं, लोदी वंश, मुगल वंश व उसके उपरान्त ब्रिटिश का शासन स्थापित हुआ।अतः हमने इन शासकों के समय दिल्ली की स्थिति को दर्शाने का प्रयास किया है।

मुख्य शब्द– दिल्ली, इन्द्रप्रस्थ, प्राचीन इतिहास, सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक महत्त्व, पुरातत्त्व, यमुना, दिल्ली सल्तनत, मुगलकाल, राष्ट्रीय राजधानी, स्थापत्य कला, भारतीय सभ्यता.

Introduction

भारत की दिल्ली का एक विस्मरणीय अतीत एवं गौरवशाली पौराणिक इतिहास है। दिल्ली का प्राचीनतम उल्लेख महाभारत नामक महापुराण मे मिलता है। जहाँ इसका उल्लेख राज रासोपमें तोमरवंश के राजा अनंगपाल को दिल्ली का संस्थापक बताया गया है। दिल्ली या " दिल्लीका " शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग उदयपुर से प्राप्त शिलालेखो पर पाया गया। जिसका समय 1170 ई. निर्धारित किया गया, 1206 ई. के बाद दिल्ली को राजधानी बनाया। 17 वीं सदी में मुगल सम्राट शाहजहाँ ने दिल्ली को शाहजहानाबाद

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 07, July 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21757042

के नाम से बसाया। वर्तमान समय में यह पुरानी दिल्ली के रूप में सुरक्षित है। 1857 की क्रांति के बाद पुनः विद्रोह को दबाने के उपरान्त भारत पर ब्रिटिशो का अधिकार हो गया, प्रारंभ में उन्होंने कलकत्ता को अपनी राजधानी बनाया। परंतु 1911 ई, में दिल्ली को ब्रिटिश भारत की राजधानी बनाया गया। इस दौरान नई दिल्ली क्षेत्र भी बसाया गया। 15 दिसंबर 1911 को दिल्ली दरबार के दौरान इस शहर की नीव भारत के सम्राट जॉर्ज पंचम ने रखी और प्रमुख ब्रिटिश वास्तुकार सर एडविन लुटियंस और सर हर्बर्ट बेकर ने इसकी रूपरेखा तैयार की, ब्रिटिश भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड इर्विन द्वारा 13 फरवरी 1931 को नई दिल्ली का उद्घाटन हुआ, बड़े स्तर पर महानगर के पुनर्निर्माण प्रक्रिया में, पुराने नगर के कुछ भागों को ढहा दिया गया ब्रिटिश काल में कनाट प्लेस, इंडिया गेट, पोस्ट ऑफिस, राष्ट्रपति भवन आदि स्मारको का निर्माण किया गया।

दिल्ली का संस्थापक – दिल्ली का अतीत अत्याधिक प्राचीन है। दिल्ली शहर के लोगों के लिए आकर्षक का केंद्र रहा हैं। इसके संस्थापक तोमर ,तवर या तूर उत्तर भारत का एक राजवंश था। ये लोग उत्तरी भारत के गुर्जर और राजपूत जाट समुदाय में पाए जाते हैं। राजा आनंदपाल तोमर ने1052 ई. में दिल्ली की स्थापना की। दिल्ली संग्रहालय में एक (वीएस 1383 शिलालेख) तोमर द्वारा दिल्ली की स्थापना के बारे में बताता हैं।

देशों अस्ति हरियाणाखयः प्रशिव्य स्वर्गसत्रियः

दिल्ली काव्य पुरी तंत्र तोमरैरस्ति निर्मिता।

अनुवाद– हरियाणा नामक देश में जो प्रथ्वी पर स्वर्ग के समान है। तोमर ने ढिल्ली नामक नगर का निर्माण किया। लोहे के खंभे पर एक शिलालेख मे अनंगपाल तोमर का नाम दिल्ली के निर्माणकर्ता के रूप में एलेक्ज़ेंडर कनिंघम बताते हैं।

"सवतः दिहाली 1109 अनंगपाल वही"

अनुवादरू सवतः 1109 (1052 सी ई) में , (अनग) पाल लोग दिल्ली

दिल्ली शब्द के उत्पत्ति (ढिल्लीका) से हुई। अपभ्रंश लेखक विबधद श्रीधर (वीएस 1189 –1230) के पसनानह चारु दिल्ली के लिए दिल्ली नाम कि उत्पत्ति की किंवदंती का पहला उदाहरण है।

हरियाणा देसे अखगम, गमियण, जानी अनवर्थ काम परचक विहटट सिरिसतुणु,जो सुख इणा परिगणिय ,रिउ रूहिशवरणु बिटुल पवटटु दिल्ली नामन जि भणिय ।

अनुवाद – हरियाणा देश में अनेक गांव है। वहाँ के ग्रामीण काफी मेहनती होते। यह दूसरों का अधिपत्य स्वीकार नहीं करते और अपने शत्रुओ का रक्त बहाने में माहिर होते हैं। इन्द्र स्वयं इस देश की प्रशंसा करते हैं, इस देश की राजधानी दिल्ली है।

पृथ्वीराज रासो में भी तोमर द्वारा दिल्ली मे (किल्ली) कील की स्थापना कि कहानी लिखी है।

दिल्ली की प्राचीनता– भारतीय महाकाव्य महाभारत में इंद्रप्रस्थ को राजधानी के रूप में पहचाना जाता था। प्रारंभ मे दिल्ली (इंद्रप्रस्थ) गांव था। भारतीय खुदाई में जो भित्ती चित्र मिले हैं। उनको महाभारत से जोड़ा जाता है।लेकिन उस समय की जनसंख्या के कोई साक्ष्य नहीं मिले हैं। कुछ इतिहासकार इंद्रप्रस्थ

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 07, July 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21757042

को पुराने दुर्ग के सामान मानते हैं।दिल्ली शहर प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक विभिन्न शासकों के शासन का साक्षी रहा। दिल्ली में समय समय पर जिन वंशो का शासन रहा, उनके बारे में वर्णन निम्न प्रकार हैं।

महाभारत काल (इंद्रप्रस्थ)– दिल्ली का सर्वप्रथम प्राचीन विवरण महाकाव्य महाभारत में मिलता है। पांडवों ने इंद्रप्रस्थ नामक किला बनाया, उन्होंने जंगल को साफ कर यमुना नदी पर किला बनाया था, जो (पुराना किला) के नाम से जाना जाता है।इतिहासकार कहते हैं कि भगवान कृष्ण और अर्जुन ने खांडवप्रसद को साफ करके इसको बसाया और उसका नाम इंद्रप्रस्थ रखा था।

पुरातत्विक साक्ष्य– खुदाई में यहाँ मोर्य, गुप्त, कुषाण और मुगल काल के अवशेष मिले ,यहाँ पाए गए (पेंटेड ग्रे बियर) संस्कृति की बर्तन इस जगह को महाभारत काल से जोड़त जोड़ते हैं । यहाँ के प्रमुख इमारतें दरवाजे (बुलंद दरवाजा) शहर ,शेर मण्डल (जिसे बाद में हुमायुँ की लाइब्रेरी)कहा गया। किला– ए – मस्जिद (शेर शाह द्वारा निर्मित) शामिल है।

अनगंपाल व चौहान वंश –

राजा अनंगपाल दिल्ली का संस्थापक था। उसने लाल कोट यानी लाल रंग का किला इसकी स्थापना राजा आनंगपाल 1060 ई. मे कि थी।

प्रथ्वीराज रासो अनुसार (11 वीं सदी) के दिल्ली के तोमर राजा अनंगपाल दितीय की पुत्री का विवाह चौहान शासक सोमेश्वर से हुआ था। इनका पुत्र पृथ्वीराज चौहान था। आनंगपाल ने अपनी नाति को दिल्ली की सत्ता सौंप दी।

आधुनिक इतिहासकार के अनुसार वे पृथ्वीराज रासो की कहानी को पूरी तरह से सच नहीं मानते हैं। उनका कहना है ।कि अनगंपाल का देहांत पृथ्वीराज के जन्म से पहले हो गया था। साक्ष्य से पता चलता है। कि 12 वीं सदी के मध्य मे पृथ्वीराज के चाचा विराज चतुर्थ ने तोमर शासकों को हराकर दिल्ली का राज्य प्राप्त किया था।

प्रथ्वीराज चौहान ने मोहम्मद गौरी से किला जीता और उसका नाम राय पिथौर रखा।

(1192 ई.) मे तराइन के युद्ध मे गौरी की विजय हुई। गौरी ने अपने जीते प्रदेश अपने दास तुकुतुबुदीन को दे दिए और कुतुबुद्दीन ने गुलाम वंश की स्थापना की। दिल्ली में कुतुबमीनार और किला– ए–कोहिना मस्जिद का निर्माण भी कुतुबुद्दीन ने ही कराया था।

दिल्ली सल्तनत– भारत पर अफगानी, फारसी व तुर्क आक्रमण ने दिल्ली सल्तनत को कमजोर कर दिया था। (1191 ई.) में पृथ्वीराज चौहान व मोहम्मद गौरी के बीच तराइन का प्रथम युद्ध हुआ। जिसमे पृथ्वीराज विजय हुआ। परंतु बाद में तराई के द्वितीय युद्ध जो 1192 ईस्वी में हुआ था। वे उसमें पराजित हुआ और दिल्ली पर मोहम्मद गौरी का कब्जा हो गया। और मोहम्मद गौरी अपने गुलाम को दिल्ली की सत्ता देकर अपने देश चला गया। दिल्ली पर पांच राजवशो ने शासन किया उनका विवरण इस प्रकार है।

गुलाम वंश– दिल्ली का पहला सुल्तान कुतुबुदीन था। उसका जन्म 1150 ई. में तुरकिस्तान में हुआ था। वह गोरी का विश्वासपात्र गुलाम था। (1206ई.) मोहम्मद गौरी की मौत के बाद कुतुबुद्दीन ने गुलाम वंश की

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 07, July 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21757042

स्थापना की। उसने दिल्ली को समाजिक ,धार्मिक, संस्कृति का केंद्र बना दिया। उसने मुस्लिम कला, वास्तुकला, संस्कृति, धर्म का प्रचार व प्रसार किया। उसने सबसे पहले दिल्ली मे कुतुब मीनार का निर्माण किया। जो एक प्रसिद् स्थलो मे से एक है। (1210 ई.) में उसकी मृत्यु के बाद उसका दामाद इल्तुमिश शासक बना। उसने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया तथा कुतुब मीनार का कार्य पूर्ण कराया। इस वशं का अंतिम शासक मोइनुद्दीन कैक्राबाद था।

गुलाम वंश के शासक–

कुतुबुद्दीन ऐबक = 1206–1210

आराम शाह = 1210

इल्तुमिश = 1210–1236

रजिया सुल्तान = 1236–1240

मोइनुद्दीन बहरमशाह = 1240–1242

अलाउद्दीन मसूदशाह = 1242–1246

नसीरुद्दीन महसूद = 1246–1265

ग्यासुददीन बलबन = 1265–1287

मोइनुद्दीन कैक्राबाद = 1287–1290

खिलजी वशं– जलालुद्दीन खिलजी ने 1290 ई. मे खिलजी वंश की स्थापना की। वह सुल्तान मुइजुदीन् कैक्राबाद के समय अधिकारी के रूप में कार्यकर्ता था। मुईजुददीन के लकवाग्रस्त होने पर उसके शिशु पुत्र शमसुदीन कायमर्स को कुछ सरदारो ने सुल्तान बनाया। सरदारो ने जलालूद्दीन की हत्या करने की कोशिश की। लेकिन जलालूद्दीन ने उनको मौत के घाट उतार दिया। और कामयर्स को उसके पद से हटाकर स्वयं शासक बन सत्ता प्राप्त की। जलालूद्दीन 70 वर्ष की उम्र में सिंहासन पर बैठा। वे आम लोगों के लिए एक दयालु व विनम्र राजा था। उसने किला खोरी से शासन किया, परंतु कुछ सरदारो ने उन्हें कमजोर शासक मानकर विद्रोह किया लेकिन उनको असफलता प्राप्त हुई। उसने विद्रोहियों को सख्त सजा नहीं दी। सिर्फ दरवेश सिदी मौला को मौत की सजा दी थी। जलालूद्दीन खिलजी की हत्या उसके भतीजे व दामाद अलाउदीन खिलजी ने की तथा सत्ता हथिया ली। अल्लाउद्दीन खिलजी ने 20 वर्ष शासन किया। कुछ इतिहास कार उसे दुराचारी शासक मानते हैं और उसके बारे में कहते है कि उसे जिस किसी पर अपने विरुद् विद्रोह कि आशंका होती थी तो वो उस परिवार के जड मूल को पूरी तरह से बर्बाद कर देता था। उसने 1299–1300 ई. मे अपने ही परिवार के लोगों को साजिश के विद्रोह मे पहले उनकी आंखें निकाल ली व बाद में उनके सिरों को काट दिया। अल्लाउद्दीन खिलजी की मृत्यु 1316 ई. मे हुई। इस वशं का अंतिम शासक कुतुबुदीन मुबारक शाह था। इसकी हत्या 1320 ई. मे खुसरो खान ने कर दी। खुसरो खान की हत्या गाजी मलिक ने की और दिल्ली का सुल्तान बना। वह ग्यासुद्दीन तुगलक के नाम से सिंहासन पर बैठा, और तुगलक वंश की स्थापना की। खिलजी वंश के प्रमुख शासक–

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 07, July 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21757042

जलालूद्दीन खिलजी= 1290–1296

अलाउद्दीन खिलजी = 1296–1316

कुतुबुदीन मुबारक शाह =1316–1320

तुगलक वंश– तुगलक वंश की स्थापना। ग्यासुद्दीन तुगलक नें 1320 मे की थी। इस वंश के योग्य शासको में गयासुद्दीन तुगलक उसका बेटा मोहम्मद बिन तुगलक और फिरोजशाह तुगलक थे फिरोजशाह तुगलक के देहांत के बाद साम्राज्य छोटे छोटे राज्य में बट गया। तैमूर आक्रमण के पश्चात् दिल्ली मे तुगलक साम्रराज्य करीब – करीब खत्म हो गया था। यदपि 1414 ई. तक राज्य करते रहें। तुगलक वंश के प्रमुख शासक –

ग्यासुद्दीन तुगलक= 1320–1325

मोहम्मद बिन तुगलक= 1325–1350

फ़िरोजशाह तुगलक=1351–1388

सैय्यद वंश– सैय्यद वशं की सस्थापना खिज्र खा ने कि थी। (1414 ई.) में वह शासक बना। परन्तु उसने सुल्तान की उपाधि धारण न करके तैमूर के प्रतिनिधि के रूप में शासन किया। सैयद वंश के शासक–

खिज्र खान= 1414–1421

मुबारक शाह= 1421–1434

मोहम्मद शाह= 1434–1445

अल्लाउद्दीन आलम शाह=1445–1451

लोदी वंश– बहलोल लोदी ने 1451 ई. में लोदी वंश की नींव रखी थी। बहलोल लोदी ने जौनपुर पर विजय प्राप्त की। उस समय दिल्ली से वाराणसी का क्षेत्र दिल्ली के शासन में शामिल था। उसके बाद उसका पुत्र निजाम खान, सिकंदर लोदी के नाम से राजा बना। इस वशं का अंतिम शासक इब्राहिम लोदी था। जो पानीपत के युद्ध में मारा गया था। उसी के समय लोदी वशं का शासन समाप्त हो गया तथा एक नए वशं की स्थापना हुई।

लोदी वंश के शासक–

वहलोल लोदी=1451–1489

सिकंदर लोदी=1489–1517

इब्राहिम लोदी = 1517–1526

मुगल वंश– बाबर उजबेकिस्तान मे राज्य करता था। उसने आटोमन व सफावी शासको की सहायता से दिल्ली के शासक इब्राहिम लोदी को बाबर ने 21 अप्रैल 1526 ई. में पानीपत के युद्ध में पराजित किया, और दिल्ली सत्ता हथिया ली तथा दिल्ली पर मुगल वंश की स्थापना की। उत्तरी भारत के कुछ भागों पर अपना अधिकार स्थापित किया तथा 1530 मे उसका उसका पुत्र हुमायूं शासक बना। लेकिन शेरशाह सूरी

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 07, July 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21757042

से पराजित हुआ और निर्वासित जीवन व्यतीत किया, लेकिन हुमायू ने दिल्ली पर दोबारा अधिकार कर अपना साम्राज्य स्थापित किया। हुमायूं के बाद उसका बेटा अकबर 14 फरवरी 1556 ई. को सिकंदर सूर को पराजित कर दिल्ली का शासक बना। अकबर ने यूरोपियन कंपनियों के साथ व्यापार को विकसित किया, जिससे सांस्कृतिक और आर्थिक विकास हुआ। उसने एक नया धर्म दिन ए इलाही की स्थापना की और राजनैतिक ,सामाजिक धार्मिक मतभेदों को दूर करने की कोशिश की, अकबर के बाद उसका पुत्र सलीम शासक बना, जो जहाँगीर के नाम से सिंहासन पर बैठा। वे अपनी न्यायप्रियता के लिए जाना जाता था। तथा अफीम का शौकीन था। इसकी पत्नी नूरजहां साम्राज्य मैं अधिक हस्तक्षेप करती थी। उस के बाद उसके पुत्र शाहजहां शासक बना। इसने वास्तुकला के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया, उसने दिल्ली में शाहजनाबाद नामक शहर बसाया, जो वर्तमान में पुरानी दिल्ली के नाम से जाना जाता है। उसने विशेष रूप से चित्रकला वस्त्र ,साहित्य और स्थापत्य कला को अधिक संरक्षण दिया। इसका शासन काल मुगल साम्राज्य का स्वर्ण युग कहा जाता है।

इसके समय मे मुगल दरबार चरम पर था। शाहजहाँ का बड़ा पुत्र दारा शिकोह 1658 ई. में शासक बना। परंतु शाहजहाँ के छोटे पुत्र औरंगजेब ने 1659 ई. मे दारा शिकोह को पराजित कर सिंहासन प्राप्त किया। दारा शिकोह को फांसी की सजा दी गई। व शाहजहाँ को उनकी मृत्य तक कैद रखा। ओरगजेब के बाद के शासक कमजोर साबित हुए इस वशं का अंतिम शासक बहादुर शाह जफर दितीय था। जो 1857 ई.के स्वतंत्रा सग्राम में अंग्रेजों द्वारा पराजित हुये, और अंग्रेजों द्वारा बहादुर शाह जफर को निर्वासित कर रंगून भेज दिया गया और वहीं पर उनकी मृत्य हो गई। मुगलवंश के बाद दिल्ली पर अंग्रेजो का शासन स्थापित हुआ। मुगलवंश के प्रमुख शासक–

बाबर =1526–1530

हुमायु =1530–1556

अकबर=1556–1605

जहाँगीर=1605–1627

शाहजहां–1627–1658

ओरगजेब =1658–1707

अंग्रेजों का शासन– अंग्रेज भारत में व्यापार के उद्देश्य से आए थे। परंतु कई कारणों से कलकत्ता के सुल्तान सिराजुदौला के विरूद् विद्रोह कर दिया। ये विद्रोह 1757 ई. में हुआ। जो इतिहास में प्लासी के युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध से अंग्रेजों की भारत में स्थिति काफी मजबूत हो गई। 22 अक्टूबर 1764 ई. को बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों ने दिल्ली के मुगल शासक शाह आलम दितीय को पराजित किया और दिल्ली पर अपना अधिकार कर लिया। अंग्रेजो ने कोलकाता को अपनी राजधानी बनाया और वहीं से शासन किया। परन्तु 1911ई. मैं दिल्ली को राजधानी बनाने की घोषणा की गई और 1912ई. मे दिल्ली भारत की राजधानी बन गयी। अंग्रेजों ने दिल्ली मे कई इमारतों का निर्माण किया। जो आज भी दिल्ली मे सुरक्षित है और अंग्रेजों के भारत में शासन की गवाही दे रही है। दिल्ली की स्थापत्य कला व सांस्कृति के विकास मे शासको का योगदान–

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 07, July 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21757042

- कुतुब मीनार– 1199 ई. मे मे कुतुबुद्दीन ने नींव रखी, इल्तुमिश ने पूरी की.
- कुवुत– उल– इस्लाम मस्जिद कुतुबुद्दीन ने 1193 ई. बनाई।
- यह भारत की पहली बनाई प्रमुख मस्जिद है।
- सुल्तान गढ़ी– इंल्तुमिश ने 1231 ई. मे अपने बेटे नसीरुद्दीन महमूद के लिए बनाया था.
- अलाई दरवाजा– अल्लाउद्दीन खिलजी ने 1311 ई .मे बनाया.
- सिरी का किला– अल्लाउद्दीन खिलजी ने 1303 ई.मे बनाया था.
- निजामुदीन ओलिया की दरगाह– अल्लाउद्दीन खिलजी के पुत्र ने 1325 ई. मे कराया। अल्लाउद्दीन खिलजी के पुत्र का नाम खिज्र खान थां
- तुगलकाबाद किला– ग्यासुद्दीन तुगलक ने बनवाया।
- फिरोजशाह कोटला (फिरोजाबाद)– फिरोजशाह तुगलक, फिरोजशाह का मकबरा होज खास,
- खिड़की मस्जिद, काली मस्जिद, बेगम मस्जिद, फिरोजशाह तुगलक ने बनवाया था।
- मोहम्मद शाह का मकबराइ अलाउद्दीन आलमशाह न 1444ई. में बनवाया था।
- सिकंदर लोदी का मकबरा, इब्राहिम लोदी ने कराया.
- पुराना किला, शेर शाह सूरी ने बनवाया.
- हुमायूँ का मकबरा, 1565 ई. मे हाँजी बेगम ने बनवाया.
- लाल किला, 1638 से 1648 ई.में शाहजनाबाद के नाम से शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया
- दिल्ली की जामा मस्जिद, 1656 ईस्वी में शाहजहाँ द्वारा बनाई गयी.
- चांदनी चौक बाजार, शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा द्वारा बनाया प्रसिद्ध बाजार है.

निष्कर्ष– दिल्ली मैं अतीत और अतिप्राचीन समय के साक्ष्य मिलते हैं। तो दूसरी तरफ अर्वाचीन समय के नियमानुसार उपनगर भी, दुनिया का कोई भी नया शहर इसकी समानता नहीं कर सकता, भारत में अतीत से लेकर वर्तमान तक कितने शहर नष्ट हो गए। परंतु दिल्ली की भौगोलिक स्थिति अपरिवर्तनशील होने के कारण वर्तमान में भी स्मृतशाली ही नहीं बल्कि प्रभावशाली रही। यह एक नगर ही नहीं महानगर भी है। भारत सरकार के संस्कृत मंत्रालय ने दिल्ली की कई इमारतों को राष्ट्रीय सांस्कृतिक स्मारक घोषित किया है। दिल्ली प्राचीन काल से ही भारत का गौरव रहा है। दिल्ली कोई आम शहर नहीं है, बल्कि ये भारत में आए विदेशी आक्रमणों का साक्षी रहा है। जिन्होंने भारत पर राज्य करने के लिए दिल्ली को सर्वप्रथम फतह किया क्योंकि दिल्ली कई शासकों के समय भारत की राजधानी रही । दिल्ली पर जिन राजाओ ने राज्य किया , उनके द्वारा बनी स्मारकों की भव्यता वर्तमान समय में भी आदित्य है ।इसी कारण दिल्ली भारत में लोगों के लिए विशेष महत्त्व रखती है।

संदर्भ सूची–

- दिल्ली, प्राचीन इतिहास, लेखक उपेंद्र सिंह.
- आसार अल सनादीद, लेखक सर सैय्यद अहमद खान.
- दिल्ली ए नोबल, लेखक खुशवंत सिंह.

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 07, July 2026 DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.21757042

- द सैवन सिटिज ऑफ दिल्ली, लेखक गाडर्न रेस्ले हार्न.
- दिल्ली द फर्स्ट सिटी ,लेखक मालविका सिंह.
- शाहजहानाबाद द लिविंग सिटी ऑफ ओल्ड दिल्ली, लेखक राणा सफवी.
- न्यू दिल्ली, मेकिंग ऑफ द कैपिटल, लेखक प्रमोद कुमार, मालविका सिंह, रुद्राशु मुखर्जी.
- दिल्ली का इतिहास विकिपीडिया.
- तोमर राजवंश का इतिहास, लेखक मीना श्रीवास्तव.
- तवंर (तोमर) राजवंश का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, लेखक देव सिंह मंडावा.
- तोमर(तंवर) राजवंश, लेखक रणवीर सिंह.
- दिल्ली के तोमर, लेखक हरि हरनिवास दिवेदी .
- तोमर जातियों का इतिहास, लेखक डॉक्टर अमित कुमार सिंह.
- पृथ्वी राजरासो, लेखक चंद्रबरदाई.
- भारतीय इतिहास, लेखक सागर.
- आधुनिक भारत का इतिहास लेखक एस .चंद्र.
- आधुनिक भारत का इतिहास लेकर, लेखक अमित कुमार.
- प्राचीन भारत का एक इतिहास रूपरेखा, लेखक प्रोफेसर डी .एन क्षा.
- मध्यकालीन भारत, लेखक सतीश चंद्र.
- मध्यकालीन भारत लेखक एस.के फंडे.
- हिस्टरी ऑफ दिल्ली सल्तनत, लेखक फरहान फारुकी.
- प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, लेखक के, सी. अग्रवाल.